परिचय

आचार्य ओम प्रकाश शर्मा

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ में अध्यक्ष पद पर कार्यरत डॉ. ओम प्रकाश शर्मा हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित लेखक व साहित्यकार है। इन्होंने पिछले 30 वर्षों में हिमालय और हिमाचल की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास पर 14 मौलिक पुस्तकों तथा 75 से अधिक शोध पत्रों का प्रकाशन किया है। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित परिसंवादों एवं संगोष्ठियों में भाग लेकर हिमालय और हिमाचल की सांस्कृतिक विरासत को प्रचारित, प्रसारित व स्थापित करने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिमाचल लिपिमाला, हिमाचल संस्कृत साहित्य का इतिहास, संस्कृत प्रभावित महासुवी एवं सिरमौरी लोकगाथाएँ (पुरस्कृत), युग पुरुष परशुराम, संस्कृत साहित्य का हिमाचल प्रदेश को योगदान, लोकगाथा दिग्दर्शिका, जागरा, देवता महाराज डकरेई इतिवृत्त, हिमाचल का सांस्कृतिक इतिहास, व्यक्तित्व निर्माण में भारतीय संस्कृति के सूत्र, भूण्डा यज्ञ पद्धति तथा भारतीय संस्कृति आदि लेखक द्वारा लिखी गई मौलिक पुस्तकें हैं। हिमाचल प्रदेश भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित स्वतन्त्रता संग्राम की पुस्तक का शोध व लेखन भी डॉ. शर्मा द्वारा किया गया है। उत्कृष्ट लेखन के लिए डॉ. ओम प्रकाश शर्मा को हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी साहित्य सम्मान, हिमाचल गौरव सम्मान, चन्द्रशेखर बेबस लोक साहित्य राष्ट्रीय पुरस्कार, परमार साहित्य सम्मान व चाणक्य वार्ता सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। डॉ. शर्मा हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी कार्यकारी परिषद् के सदस्य भी हैं।

Himachal Pradesh University,

Summer Hill, Shimla-5

Board of Studies

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ

(Dr. Yashwant Singh Parmar Chair)

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–5

पाठयक्रम

(Syllabus)

(क) (Post Graduate Diploma in Parmar Studies)

डॉ. यशवन्त सिंह परमार अध्ययन में स्नातकोत्तर

उपाधि पत्र

पाठ्यक्रम के मूल उद्देश्य

- हिमाचल निर्माता, महान स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक, पहाड़ी संस्कृति के पोषक, प्रदेश के संवैधानिक संरचनाकार एवं आत्मनिर्भर हिमाचल के वास्तुकार डॉ. यशवन्त सिंह परमार के चिन्तन, मनन, अध्ययन और लेखन के सर्वाङ्गीण पक्षों का गहन अध्ययन अपेक्षित है। इस उद्देश्य से डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ अपने विभाग में– ''डॉ. यशवन्त सिंह परमार अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि पत्र'' (Post Graduation Diploma in Parmar Studies) पाठयक्रम का प्रस्ताव अध्ययन समिति के समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करता है। यह पाठ्यक्रम जून, 2021 से लागू किया जाएगा।

- इस पाठयक्रम में हिमाचल निर्माता डॉ. यशवन्त सिंह परमार के जीवन्त जीवन दर्शन, स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भागीदारी, 15 अप्रैल, 1948 से 25 जनवरी, 1971 तक हिमाचल को पृथक् राज्य का दर्जा दिलवाने में उनके द्वारा किए गए संवैधानिक पक्षों पर चिन्तन, आत्म निर्भर हिमाचल के आर्थिक पक्षों पहाड़ी संस्कृति की पोषक भाषा एवं बोलियों, लिपियों तथा सामाजिक प्रथाओं की विषयवस्तु का अध्ययन–अध्यापन करवाया जाएगा। इन विषयों की पृष्ठभूमि में

डॉ. यशवन्त सिंह परमार का पहाड़ी जन–जीवन व गौरव का चिन्तन निहित है। पाठ्यक्रम के माध्यम से हिमाचल के इतिहास, हिमाचल की संस्कृति, सभ्यता और पहाड़ के आत्मगौरव की गाथा का गान करने वाली पहाड़ी भाषा, बोलियों एवं लिपियों के पक्षों के माध्यम से छात्रों को शिक्षित करना है।

- हिमाचल निर्माता डॉ. यशवन्त सिंह परमार का चिन्तन यहाँ उद्धृत करना प्रासंगिक है। उन्होंने 20 अक्तूबर, 1975 ई. को एक समारोह में कहा था–''पहाड़ी भाषा जो हिमाचल प्रदेश के लोगों की भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, इस प्रदेश की असल भाषा है। इस भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्न किए जाएंगे। वास्तव में हिमाचल के पूर्ण राजत्व प्राप्ति द्वारा पहाड़ियों के विशिष्ट व्यक्तित्व को स्वीकारा गया है और उस पृष्ठभूमि में पहाड़ी भाषा को अन्ततः अपना उचित स्थान मिल जाएगा। मैं आशा करता हूँ कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय पहाड़ी भाषा के विकास में सहयोग देगा। किसी भी प्रदेश की संस्कृति को उभारने के लिए वही भाषा सबसे सशक्त माध्यम है जो क्षेत्रा विशेष में व्यापक रूप से बोली जाती है।

पाठ्यक्रम का दृष्टिकोण व कालावधि

- यह पाठयक्रम 1 वर्ष का होगा। एक वर्ष उपरान्त तीन पत्रों की परीक्षा व अन्तिम पेपर के स्थान पर लघु परियोजनाओं एवं लघु लेखों के लेखन के माध्यम से पहाड़ी भाषा (बोलियों) में कविता, कहानी, गाथा, लोकनाट्य के संवाद, लोक सुभाषित, निबन्ध लेखन, पहाड़ी शब्दकोश तथा हिमाचली लिपियों की वर्णमाला का लेखन करवाकर व्यावहारिक कौशल अर्जन करवाया जाएगा।

पाठ्यक्रम के लिए पात्रता

i. छात्र का किसी भी संकाय से स्नातक होना अपेक्षित है। स्नातक स्तर की डिग्री मान्यता प्राप्त किसी महाविद्यालय/संस्कृत महाविद्यालय/विश्वविद्यालय से होना अपेक्षित है। इसके लिए स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त छात्र भी पात्र होंगे।

ii. छात्र हिमाचल के इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, हिमाचल की सामाजिक प्राथाओं, डॉ. यशवन्त सिंह परमार के जीवन्त जीवन दर्शन के पक्षों से परिचित होना चाहिए।

iii. छात्रों का चयन Entrance Test के आधार पर किया जाएगा। छात्र ऑनलाईन इस पाठयक्रम के लिए अपना आवेदन करेंगे।

क्रैडिट (Credits)

पाठयक्रम में निधारित प्रत्येक पत्र 8 क्रैडिट का निर्धारित है। 8 क्रैडिट में (i) 20 घण्टे कक्षा व्याख्यान (Class Room Lecture) / on line lecture / class room activities/ (ii) 10 घण्टों में आचार्य प्रदत्त/पाठयक्रम सम्बन्धी/क्रियाकलाप/ ट्यूटोरियल/प्रैक्टिकल आदि गतिविधियां सम्मिलित रहेगी। (iii) 30 घण्टे छात्र के लिए पाठ्यक्रम सामग्री संकलन/सामूहिक शैक्षिक गतिविधियाँ/पुस्तकालय भ्रमण/ परिसंवाद/संगोष्ठियाँ, लेखन कला तथा प्रोजैक्ट निर्माण से सम्बन्धित रहेंगे। प्रत्येक पत्र में छात्र को 40 प्रतिशत अङ्क अर्जित करना अनिवार्य होगा।

उपस्थिति

छात्रों को पाठयक्रम के गम्भीर पक्षों को समझने के लिए निर्धारित समय सारिणी के अनुसार व्याख्यान में अपनी उपस्थिति निर्धारित करनी होगी। छात्रों की 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है। इस से कम उपस्थिति वाले छात्रों को परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

परीक्षा एवं अङ्क

प्रत्येक पत्र 100 अङ्क का निर्धारित होगा। इसमें अङ्कों का बंटवारा निम्न रूप से किया जाएगा।

i)	Mid Term Examination	= 15 अङ्क
ii)	Attendance	= 5 अङ्क
iii)	Assignments/Presentation	= 10 अङ्क
iv)	Term end Examinations	= 70 अङ्क
	Total	= 100 अङ्क

कुल सीट (Seats)

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ एक वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि पत्र के लिए 30 सीटों (Seats) के अनुमोदन का प्रस्ताव समिति के समक्ष प्रस्तुत करती है।

प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा पीठों (Chairs) के लिए निर्धारित नियमों के अनुरूप रहेंगे।

प्रथम पत्र

डॉ. परमार : जीवन्त जीवन दर्शन

Course Code : Parmar Peeth 101

Paper : I, Total Marks 100

Credit : 8

प्रस्ताव

डॉ. यशवन्त सिंह परमार का जीवन्त जीवन दर्शन गांव के प्रत्येक जन के लिए आज भी प्रेरक व सार्थक है। गांव का व्यक्ति आज भी डॉ. परमार के चिन्तन एवं जीवनदर्शन के प्रत्येक पक्ष से आगे बढ़ने के लिए ऊर्जा तथा प्रेरणा ग्रहण करता है। हिमाचल निर्माण के प्रत्येक पहलू को हम उनके जीवन दर्शन की तथ्यपरक जानकारी प्राप्त किए बिना समझ नहीं सकते। उनके जीवन दर्शन में पहाड़ की समूची वेदनाएं और भविष्य का मार्ग निहित है। स्वाधीनता आन्दोलन के संघर्ष की गाथाएं भी उसमें समाहित है। यहां प्रथम पत्र में इन सभी बिन्दुओं को पठन–पाठन के माध्यम से परिचायत्मक रूप से प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है।

Unit I

i) जीवन परिचय : जन्म, शिक्षा–दीक्षा एवं वैवाहिक जीवन।

ii) जिला व सत्र न्यायधीश के रूप में कार्य

Unit II

i) डॉ. यशवन्त सिंह परमार की रचनाओं का परिचय।

Unit III

स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में स्वाधीनता आन्दोलन में भाग

i) भारत छोड़ो आन्दोलन का कालखण्ड (सन् 1942 से 1945)

ii) प्रजामण्डल की गतिविधियाँ (सन् 1945 से 15 अप्रैल 1948)

Unit IV

पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के लिए किए गए कार्यों की कालक्रमिक यात्रा

(15 अप्रैल, 1948 से 25 जनवरी, 1971 तक)

15 अप्रैल, 1948 को 9 सदस्यों की सलाहकार समिति का गठन, पार्ट 'सी' स्टेट, विधान सभा का प्रावधान, 24 मार्च, 1952 को डॉ. परमार का प्रथम मुख्यमन्त्री बनना, राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना, 31 अक्तूबर, 1956 को हिमाचल विधान सभा का समाप्त होना, क्षेत्रीय परिषद् का गठन, 1957 में टैरिटोरियल कांऊसिल का गठन, गर्वनमेंट ऑफ यूनियन एक्ट 1963 का पास होना, प्रदेश विधान सभा की पुनः बहाली, तीन सदस्यीय मन्त्रिमण्डल का गठन, 1 नवम्बर, 1966 को विशाल हिमाचल का गठन, 25 जनवरी, 1971 पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति।

अनुशंसित पुस्तकें

1. डॉ. यशवन्त सिंह परमार; हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी,
2. हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास; भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश शिमला, 2013
3. हिमाचल निर्माता एवं युगपुरुष डॉ. वाई.एस. परमार; पं. हेम चन्द शर्मा, हिमवन्ती मीडिया, बद्रीनगर पांवटा साहिब, सिरमौर, 2008
4. Yashwant Singh Parmar: A Political Biography; Rajender Attri, Sarla Publications, Lower Pantha Ghati, Shimla-9, Edition, 2005
5. Polyandry in the Himalayas; Y.S. Parmar, Vikas Publish House, Delhi, 1975

द्वितीय पत्र

डॉ. परमार : आत्म निर्भर हिमाचल चिन्तन

Course Code : Parmar Peeth 101

Paper : II, Total Marks 100

Credit : 8

प्रस्ताव

यह पत्र डॉ. यशवन्त सिंह परमार द्वारा विधानसभा के Buget Sessions एवं सार्वजनिक मंचों पर दिए गए भाषणों और उनके द्वारा लिखे गए लेखों पर आधारित होगा। इसमें–सड़कों के निर्माण, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, बागवानी, वन्य सम्पदा, जल संसाधन, लघु बिजली परियोजनाओं तथा त्रिमुखी वन खेती, आलू राज्य तथा ग्राम स्वराज्य जैसी परियोजनाओं की विषयवस्तु का पाठन–पाठन होगा। डॉ. परमार द्वारा दिए गए बजट भाषणों, लिखित लेखों तथा सार्वजनिक संभाषणों में ही आत्मनिर्भर हिमाचल के दृष्टिकोंण निहित हैं। छात्रों को संक्षेप में इन विषयों की जानकारी प्रदान की जाएगी। विषयवस्तु का विभागशः विवरण निम्न है–

Unit I

हिमाचल को आत्मनिर्भर बनाने के लिए डॉ. परमार द्वारा निम्न विषयों का चिन्तन, अध्ययन व विश्लेषण, सड़कों के निर्माण तथा स्वास्थ्य एवं शिक्षा सम्बन्धी मूलभूत सुविधाओं पर Buget Sessions एवं सार्वजनिक मंचों पर डॉ. परमार द्वारा दिए गए अभिभाषणों के दृष्टिकोणों की विषयवस्तु का अध्ययन और विश्लेषण।

1. कृषि

क) कृषि क्षेत्र में सहकार

ख) भूमिसुधार

ग) बीज आलू पैदावार व विपणन

घ) चकबन्दी

ङ) गांव से पलायन की चिंता

च) कृषि विकास के लिए दूरदृष्टि

छ) पिछड़ा वर्ग (SC, ST) उत्थान योजनाएँ

Unit II

डॉ. परमार द्वारा दिए गए अभिभाषणों में निम्न विषयों का अध्ययन :

1. बागवानी

क) बागवानी में नाम व बागवानी विकास पर विचार

ख) वर्ल्ड बैंक बागवानी परियोजना

ग) फलों का भण्डारण व विपणन

Unit III

डॉ. परमार द्वारा दिए गए अभिभाषणों के दृष्टिकोणों की निम्न विषयवस्तु का अध्ययन व विश्लेषण।

1. वन

क) वनों के कटान से नुकसान एवं वनों की रक्षा

ख) हिमाचल के वनों का महत्त्व

ग) वनों से आय एवं वनों की रक्षा

2. रोजगार एवं शिक्षा

3. जल संसाधनों का दोहन

Unit IV

निम्न परियोजनाओं की विस्तृत व्याख्या।

i) त्रिमुखी वन खेती परियोजना

ii) पहाड़ों में विकास की धूरी–सड़कें

iii) विशाल हिमाचल–एक सफल कदम

अनुशंसित ग्रन्थ

1. हिमाचल प्रदेश विधान सभा में डॉ. परमार के विचार; हिमाचल विधान सभा सचिवालय, 2019
2. Sovenir in the memory of Dr. Y.S. Parmar; Himalayan forest farming & environmental conservation society, Shimla, 4 august, 1982
3. Years of Challenge and Growth; Y.S. Parmar, Rebicon Publishing House, New Delhi, 1977
4. Himachal Pradesh: Case for Statehood; Directorate of Public Relations, H.P., 1968
5. Party Politics in a Himalayan State; Ranbir Sharma, National Publishing House, New Delhi, 1980
6. Himachal Past, Present and Future; Directorate of Correspondence Courses (DCC), HPU, Shimla-171005, 1975
7. History of Himachal Pradesh; Mian Goverdhan Singh, Yugbodh Publishing House, Delhi, 1982

तृतीय पत्र

पहाड़ी भाषा, बोलियाँ व लिपियाँ

Course Code : Parmar Peeth 103

Paper : III, Total Marks 100

Credit : 8

प्रस्ताव

यह पत्र हिमाचल की अपनी पहाड़ी भाषा, भाषा की बोलियों और लिपियों पर आधारित होगा। डॉ. परमार पहाड़ी भाषा, बोलियों व लिपियों को अधिमान देते थे। यद्यपि डॉ. परमार ने लिपियों में टाकरी अथवा ठाकुरी लिपि का ही उल्लेख किया है परन्तु हिमाचल के समूचे क्षेत्र से जो अभिलेख एवं पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई हैं उनमें ब्राह्मी, खरोष्ठी, कुटिल, शारदा, टाकरी, पाबुची, भट्टाक्षरी, चन्दवाणी और पण्डवाणी लिपियों में लेखन कार्य हुआ है। इसमें हिमाचल के भौगोलिक क्षेत्र, पहाड़ी भाषा, बोलियों, लिपियों तथा सामाजिक प्रथाओं की विषयवस्तु को पाठयक्रम में सम्मिलित किया गया है। वस्तुतः डॉ. परमार ने पहाड़ी भाषा, बोलियों एवं सामाजिक प्रथाओं की गौरवशाली पहचान की पृष्ठभूमि पर ही हिमाचल को पृथक् राज्य के रूप में प्रस्तावित किया था। इसी आधार पर हिमाचल का निर्माण संभव हुआ। छात्रों को सामान्य रूप से इन विषयों की जानकारी प्रदान की जाएगी।

Unit I

हिमाचल का स्वरूप

i) हिमाचल का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्वरूप

ii) समाज और संस्कृति

iii) पहाड़ी भाषा–स्वरूप और उद्‌भव

Unit II

पहाड़ी भाषा एवं बोलियाँ

i) पहाड़ी भाषा की बोलियाँ : जौनसारी, सिरमौरी, बघाटी, क्योंथली, कुल्लुई, मण्डियाली, चम्बयाली, कांगडी और कहलूरी (बिलासपुरी)।

ii) पहाड़ी बोलियों की उपशाखाएं : चुराही, पंगवाली, लाहौल–स्पीति की लाहुली, कणाशी, मण्डी–सिराजी, कयोंथल–हण्डूरी, बाघली, शिमला–सराजी, बराड़ी शौराचली, किरणी, कोची, सिरमौरी–धारठी, गिरीपारी अथवा बिशौई, हमीरपुरी एवं उन्नयाली। क्योंथली की बराड़ी शौराचली, किरणी, कोची तथा सिरमौरी की बिशौई उपशाखाएं सामूहिक रूप से महासुवी बोली।

Unit III

लोक साहित्य

i) लोक साहित्य का स्वरूप

ii) लोक साहित्य के प्रकार–लोकगीत, लोक कथाएं, लोक गाथाएं, लोक नाट्य, लोक सुभाषित : (सामान्य परिचय)

iii) बोलियों में निबद्ध लोक साहित्य

iv) लिपियां–ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुप्त ब्राह्मी, कुटिल, शारदा, टांकरी, पाबुची, भट्टाक्षरी, पंडवाणी, चन्दवाणी। (वर्णमाला परिचय)

Unit IV

सामाजिक प्रथाएं

i) खान–पान एवं रहन–सहन

ii) वस्त्राभूषण

iii) मेले एवं त्यौहार

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिमाचल प्रदेश क्षेत्र और भाषा; डॉ. यशवन्त सिंह परमार, पब्लिक रिलेशन निदेशालय, हिमाचल प्रदेश, 1970

2. Himachal Pradesh Area and Language; Dr. Y.S. Parmar, Directorate of Public Relation, Himachal Pradesh

3. पहाड़ी (हिमाचली) भाषा, वर्तमान और भविष्य; राज्य भाषा संस्थान, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश

4. पहाड़ी भाषा व्याकरण; (सम्पा.) एम.आर. ठाकुर, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, 2008

5. भारतीय प्राचीन लिपिमाला; पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, राजस्थान, संशोधित संस्करण, 2016

6. पहाड़ी–हिन्दी शब्द कोश; डॉ. बी.आर. ठाकुर, हिमाचल प्रदेश कला संस्कृति भाषा अकादमी

7. Dictionary of Phari Dialects; Tika Ram Joshi, Art Languages Cutural Academy 2020

8. हिमाचल प्रदेश लोक संस्कृति; डॉ. सी.एल. गुप्त, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2010

9. लोक साहित्य एवं संस्कृति; डॉ. श्री राम शर्मा, कमल प्रकाशन, बिलासपुर, हि.प्र., 2010

10. कुल्लुई लोक साहित्य; पदम चन्द कश्यप, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972

11. पहाड़ी भाषा, बोलियाँ व लोक साहित्य, डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, पुस्तक प्रकाशनाधीन

चतुर्थ पत्र

पहाड़ी भाषा, बोलियाँ एवं लिपियाँ : लेखन कला कौशल अर्जन

Course Code : Parmar Peeth 104
Paper : IV, Total Marks 100
Credit : 8

प्रस्तावना

डॉ. यशवन्त सिंह परमार स्वयं पहाड़ी भाषा व बोलियों को अधिमान देते थे। उन्होंने पहाड़ी भाषा व बोलियों में लेखन को भी प्रोत्साहन दिया। हिमाचल प्रदेश क्षेत्र और भाषा नामक पुस्तक में डॉ. परमार ने इसका जिक्र किया है। चतुर्थ पत्र पहाड़ी भाषा की बोलियों और लिपियों की विषयवस्तु के आधार पर डॉ. यशवन्त सिंह परमार चिन्तन के अनुरूप कौशल अर्जन का होगा। इसमें लघु परियोजनाएं (20–25 पृष्ठ), लुप्त होती लिपियों की वर्णमाला लेखन में कौशल अर्जन, अपनी–अपनी बोलियों में लघुनिबन्ध लेखन, लोक गीत लेखन (अर्थ सहित), गाथा लेखन (अर्थ सहित), कथा लेखन, लोक सुमाषितों व लोक शब्दावली के अर्थों की जानकारी आदि विषयों की लेखन कला को समायोजित किया गया है। विषय वस्तु को चार विभागों में बांटा गया है। यूनिट एक से 15 अङ्क की लघु परियोजना अथवा निबन्ध लेखन अथवा लेख लेखन निर्धारित है। यूनिट 2 से भी एक लघु परियोजना, निबन्ध लेखन अथवा लेखन की 15 अङ्कों की लघु परियोजना निर्धारित है। यूनिट 3 में भी 25 अंङ्कों की एक परियोजना निर्धारित विषयों के अनुसार होगी। यूनिट 4 में 25 अङ्कों की एक परियोजना निर्धारित होगी।

Unit I

i) पहाड़ी भाषा के उद्भव और विकास पर लघु परियोजना तैयार करना अथवा लेख या निबन्ध लिखना। छात्रों को इसमें पहाड़ी बोलियों के उद्धरण भी प्रदान करने होंगे।

Unit II

i) पहाड़ी भाषा की बोलियों, उपबोलियों एवं लिपियों पर लघु परियोजना तैयार करना अथवा लेख या निबन्ध लिखना। छात्रों को इसमें बोलियों के उद्धरण भी प्रदान करने होंगे।

Unit III

पहाड़ी भाषा एवं बोलियों की परियोजनाएं। (एक परियोजना)

i) छात्रों की रूचि (Choice) के अनुरूप अपनी–अपनी बोली में एक गीत, कथा, गाथा को लिखना तथा हिन्दी में उसका भावार्थ या अर्थ लिखना।

ii) हिमाचल के किसी भी एक लोकनाट्य के संवादों को लिखना।

iii) लोक सुभाषितों या लोक भाषा के शब्दों को अर्थ साहित लिखना (100 शब्द या 25 लोक सुभाषित)।

नोट : छात्र पारम्परिक गीतों का चयन हिमाचलीय लोकलहरी पुस्तक से, कथा का चयन कथा–कहाणी पुस्तक से, लोक नाट्यों का चयन हिमाचली लोकनाट्य पुस्तक से, लोक गाथाओं का चयन लोकगाथा दिग्दर्शिका एवं संस्कृत प्रभावित महासुवी एवं सिरमौरी लोकगाथा पुस्तक से और लोक सुभाषित पुस्तक से लोक सुभाषितों का चयन कर सकते हैं।

Unit IV

लिपियों की वर्णमाला लिखना। (एक परियोजना)

i) ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला का लेखन

ii) गुप्त ब्राह्मी की वर्णमाला का लेखन

iii) शारदा लिपि वर्णमाला का लेखन

iv) टांकरी लिपि वर्णमाला का लेखन

v) पाबुची, भट्टाक्षरी, पण्डवाणी, चन्दवाणी–लिपि वर्णमाला लेखन।

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिमाचल की लिपिमाला; डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, हिमाचल कला संस्कृतिक भाषा अकादमी, शिमला–5
2. हिमाचल के लोक नाट्य; हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, हिमाचल प्रदेश
3. कथा कहाणी (कहानी संग्रह); डॉ. कर्म सिंह, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, 2020
4. हिमाचल लोक लहरी; (पारम्परिक हिमाचली लोकगीतों का संग्रह) (संकलन) एस.एस.एस. ठाकुर, लोक माधुरी प्रकाशन, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश
5. लोकगाथा दिग्दर्शिका; डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी
6. लोक गाथाओं में सृष्टि रचना विचार; (सम्पा.) डॉ. विद्याचन्द ठाकुर, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश
7. हिमाचल लोक संस्कृति; डॉ. सी.एल. गुप्त, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
8. हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत; हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला–4, संस्करण 2000
9. संस्कृत प्रभावित महासुवी एवं सिरमौरी लोक गाथाएँ; डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 2011
10. एन्टीक्वीटीज़ ऑफ चम्बा स्टेट; जे.पी.एच. फोजल, कलकत्ता, वॉ. I, 1911
11. एन्टीक्वीटीज़ ऑफ चम्बा स्टेट; बी.सी. छाबड़ा, वॉ. II, दिल्ली, 1975
12. Shirgul Parmar : A Modern Folk Bellad; Som P. Ranchan

13. शिर्गुल परमार : एक आधुनिक लोकागाथा; सोम पी. रञ्चन (अनु.) रोशन लाल शर्मा, ग्राफिर इण्डिया, चण्डीगढ़, 2008

14. पहाड़ी भाषा, बोलियाँ व लोक साहित्य, डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, पुस्तक प्रकाशनाधीन

Annexure-I
(Paper Setting Scheme for Paper 101, 102, 103, 104)
Himachal Pradesh University,
Summer Hill, Shimla-5

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला–5

डॉ. यशवन्त सिंह परमार अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि पत्र

Course Code: Parmar Peeth 101, 102, 103 पाठ्यक्रमों की
वार्षिक परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की रूपरेखा।

खण्ड–क

प्रश्न 1 (i) इस खण्ड के अन्तर्गत यूनिट I, II, III एवं IV से सम्बन्धित समूचे पाठ्यक्रम से 10 वस्तुनिष्ठ (MCQ) प्रश्न पूछे जाएंगे। इन प्रश्नों के उत्तर एक पद में देने होंगे। 10x1=10

(ii) इस खण्ड के अन्तर्गत समूचे पाठ्यक्रम से लघु उत्तर वाले 5 प्रश्न निर्धारित होंगे। इन लघु प्रश्नों के उत्तर 25 शब्द प्रति प्रश्न के अनुसार लिखने होंगे। 5x4=20

खण्ड–ख

प्रश्न 2 इस खण्ड के अन्तर्गत यूनिट–I में से दो प्रश्न पूछे जाएंगे। इन दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर विस्तार से प्रदान करना होगा। 10

खण्ड–ग

प्रश्न 3 इस खण्ड के अन्तर्गत यूनिट– II में से दो प्रश्न पूछे जाएंगे। इन दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर विस्तार से प्रदान करना होगा। 10

खण्ड–घ

प्रश्न 4 इस खण्ड के अन्तर्गत यूनिट– III में से दो प्रश्न पूछे जाएंगे। इन दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर विस्तार से प्रदान करना होगा। 10

खण्ड–ङ

प्रश्न 5 इस प्रश्न के अन्तर्गत यूनिट– IV में से दो प्रश्न पूछे जाएंगे। इन दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर विस्तार से प्रदान करना होगा। 10

कुल अङ्क = 70

नोट : यह रूपरेखा Parmar Peeth 101, 102, 103 के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप निर्मित की गई है। सभी कोर्सकोड के प्रश्न पत्र उपर्युक्त रूपरेखा के अनुसार बनाए जाएंगे।

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि पत्र

Course Code: Parmar Peeth 104 पाठ्यक्रम के लिए वार्षिक परीक्षा का प्रारूप।

इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य पहाड़ी भाषा की बोलियों में लेखन कौशल अर्जन है।

(Assignment, Projects and Interenal Assessment Based Paper)

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ से सम्बन्धित स्नातकोत्तर उपाधि पत्र हेतु चतुर्थ पत्र की वार्षिक परीक्षा की रूपरेखा में 80 अङ्क के चार यूनिट और 20 अङ्क का साक्षात्कार निर्धारित होगा। साक्षात्कार एवं प्रत्येक यूनिट की Evaluation के लिए तथा (Viva-Voce) के लिए External-Internal Experts रहेंगे। यह expert निर्धारित Paper setters and evalaution panel से appoint किए जाएंगे। Panel समय–समय पर विभाग निर्धारित करेगा।

UNIT-I

यह खण्ड पहाड़ी भाषा के उद्भव और विकास पर लघु परियोजना अथवा लेख अथवा निबन्ध लेखन से सम्बन्धित रहेगा। अङ्क 15

UNIT-II

इस खण्ड के अन्तर्गत पहाड़ी भाषा की बोलियों एवं लिपियों पर लघु परियोजना तैयार करना अथवा लेख या निबन्ध लेखन से सम्बन्धित रहेगा। अङ्क 15

UNIT-III

इस खण्ड के अन्तर्गत छात्रों की रूचि के अनुरूप अपनी बोली में एक पारम्परिक गीत, कथा, गाथा को अपनी बोली में लिखना, किसी एक लोकनाट्य के संवादों को लिखना अथवा लोक सुभाषितों या लोकभाषा के शब्दों को अर्थ सहित लिखना। लोक सुभाषित=25 अथवा पारम्परिक शब्द=100 निर्धारित होंगे। अङ्क 25

UNIT-IV

इस खण्ड के अन्तर्गत ब्राह्मी, गुप्त ब्राह्मी, शारदा, टाकरी, पाबुची, भट्टाक्षरी, पण्डवाणी, चन्दवाणी लिपि में से एक वर्णमाला का लेखन करना। अङ्क=25

(i) 80 (परियोजना इत्यादि)

(ii) साक्षात्कार (Viva-Voce) = 20

कुल अङ्क = 80+20=100

Annexure-II

(Paper Setters and Eveluators Panel)

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ

डॉ. यशवन्त सिंह परमार अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि पत्र

	नाम व पता	सम्पर्क
1.	डॉ. अंकुश भारद्वाज सहायक आचार्य इतिहास अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती अध्ययन केन्द्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला–5	98760–35002
2.	प्रो. श्रीराम शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला–5	70185–26891
3.	डॉ. शिव भारद्वाज सहायक आचार्य इतिहास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोलन, हि.प्र.	94188–28866
4.	डॉ. ओम प्रकाश राही (हिमाचल के प्रतिष्ठित लेखक) सेवानिवृत्त सह आचार्य संस्कृत प्रकाश पुंज 131, हिमुडा कालोनी शुभखेड़ा, पांवटा साहिब–173025	82787–97150
5.	डॉ. सूरत ठाकुर (हिमाचली लोक विधाओं के प्रतिष्ठित लेखक) गाँव परगाणु, डाकघर व तहसील भुंतर जिला कुल्लू–175125	98163–99807
6.	डॉ. कर्म सिंह (हिमाचली संस्कृति के प्रतिष्ठित लेखक) सचिव, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी	94184–70345
7.	बोर्ड़ ऑफ स्टडीज़ के समस्त सम्मानित सदस्य (सूची संलग्न)	

Himachal Pradesh University,
Summer Hill, Shimla-5
Board of Studies

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ

(Dr. Yashwant Singh Parmar Chair)

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–5

(ख) विद्यावाचस्पति उपाधि (Ph.D. Degree)

प्रस्ताव

डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ सत्र 2021–22 से विद्यावाचस्पति (Ph.D.) की उपाधि हेतु 3 शोधार्थियों का चयन कर शोधकार्य करवाने का प्रस्ताव प्रस्तुत करती है। विद्यावाचस्पति (Ph.D.) शोध कार्य के लिए निम्नलिखित विषयवस्तु के विभिन्न पहलुओं अथवा पक्षों की प्रस्तावना अनुमोदनार्थ प्रस्तुत।

1. हिमाचल प्रदेश के इतिहास से सम्बन्धित विषय।
2. हिमाचल की संस्कृति से सम्बन्धित विषय।
3. डॉ. परमार का राजनीति से सम्बन्धित विरचित साहित्य।
4. पहाड़ी भाषा, बोलियाँ व लिपियाँ।
5. हिमाचल की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ।
6. हिमाचल का लोक साहित्य
    - i) पारम्परिक लोकगीत
    - ii) लोक कथाएँ
    - iii) लोक गाथाएँ
    - iv) लोक नाट्य

उपाधि हेतु अर्हताएँ व चयन

i) विद्यावाचस्पति की उपाधि हेतु डॉ. यशवन्त सिंह परमार पीठ प्रवेश परीक्षा (entrance test) आयोजित करेगा

ii) प्रवेश परीक्षा उपर्युक्त 6 विषयों से सम्बन्धित होगी।

iii) इस परीक्षा के लिए Social Sciences (इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र) एवं संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी विषयों के साथ 55% स्नातकोत्तर उपाधि/JRF/NET/SET/M.Phil. परीक्षा पास छात्र पात्र (Elegible) होंगे। JRF/NET/SET/M.Phil. उत्तीर्ण छात्रों को साक्षात्कार में अधिमान दिया जाएगा।

iv) परीक्षा 80 अङ्कों की व साक्षात्कार 20 अङ्कों का निर्धारित होगा। साक्षात्कार में हिमाचल के उपर्युक्त विषयों की जानकारी अपेक्षित है।

vi) परीक्षा की पात्रता के निर्धारित इतिहास, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी विषयों में चयनित छात्र विद्यावाचस्पति की (Ph.D.) उपाधि प्राप्त करके विभिन्न नौकरियों (Services) के लिए पात्र होंगे। (Parental Departments)

vii) चयनित शोधार्थियों को परमार पीठ में निर्धारित Course Work को करना अनिवार्य होगा। Course Work की अवधि 6 मास रहेगी। प्रथम पत्र Research Methodology/शोध प्रवृधि एवं दूसरा पत्र परमार के चिन्तन पर रहेगा।

आचार्य ओम प्रकाश शर्मा
अध्यक्ष, परमार पीठ
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला–171005